गुरू घासीदास जी की 255 वीं जयंती वर्ष 2011
के अवसर पर
विचार मंथन श्रृंखला का आयोजन

विषय ः सत्नाम संस्कृति – कल , आज व कल ।

आदरणीय संत जनों , जय सत्नाम

यह सर्व विदित है कि संस्कृति सभ्यता की जननी है । संस्कृति किसी भी व्यक्ति अथवा समाज के सर्वोन्मुखी विकास हेतु प्रेम और भाईचारा के साथ खान-पान, रहन-सहन, आदत- व्यवहार की एक समुचित दिशा निर्धारित करती है। किसी भी सभ्यता के स्तर का आंकलन उनके सस्कृति से किया जा सकता है। दुनिया में सतनाम ही एक ऐसी विचारधारा है जो एक और केवल एक सा ही है। बाकी सभी धर्मो में मत- मतान्तर है । सतनाम एक ऐसी विचारधारा है जहां प्रेम और भाईचारा की नदियाँ बही है और जो भी व्यक्ति इस सतनाम संस्कृति के सम्पर्क आया वह इस धारा में प्रवाहित हुए बिना नहीं रह सका. विश्व शांति और सदभाव के सन्देश के साथ यह सतनाम संस्कृति हमें प्रकृति के अत्यंत करीब ले जाती है।

रूढिवाद और अंधविश्वाश से कोसों दूर प्रकृति पूजा में प्रसिद्ध छत्तीसगढ़ की मूल संस्कृति अपने आप में अनोखा है जिसे शायद ही किसी ने गहराई तक जानने की कोशिश की है। यहाँ के प्रत्येक पर्व प्रकृति व कृषि उपज से जुड़ा हुआ है। हरेली, भोजली, नागपंचमी, पोला, नवाखवाई, गढ़ प्रथा, सुरुती, गौरा, जेठौनी, छेरछेरा के अलावा सुआ, करमा, राउतनाचा, पंथी, शैला, डंडा नृत्य की परम्परा आज भी विद्यमान है। इतिहास साक्षी है कि सिरपुर जो महाकौशल की राजधानी रहा है- बौद्धकालीन संस्कृति का छाप आज भी मौजूद है। यही कारण है कि इस छत्तीसगढ़ की पावन धरती में बौद्धिक चेतना के साथ सतनाम संस्कृति को फलने -फूलने व पनपने का सुअवसर मिला। यहाँ के मूलनिवासी सतचेतन कोयापुनेम को आज भी मानते है। वहीं धरमदास जी को छत्तीसगढ़ का सम्राट अशोक कहा जाय तो अतिशयोक्ति नहीं होगा, जिन्होंने आधुनिक बुद्ध - संत कबीर की विचारधारा को इस पावन भूमि में पल्लवित किया।

यहाँ की पावन धरती गिरौदपूरी में जन्मे महान संत बाबा गुरु घासीदास ने रूढिवाद और अंधविश्वास से कोषों दूर- प्रेम, दया, करुणा, क्षमा, विनय और शील आधारित सतनाम विचारधारा के माध्यम से; जातिविहीन समाज की स्थापना कर; नवचेतन सतनाम संस्कृतिका सूत्रपात किया। फलस्वरूप यहाँ के सतनामी,दलित, आदिवासी व समस्त पिछड़ी जातियां बड़े पैमाने पर अपने जाति वर्ण को छोड़कर समतामूलक सतनाम संस्कृति को अंगीकृत किये हुए हैं। यह पवित्र भूमि जहाँ महामानव बुद्ध, संतकबीर से लेकर गुरु घासीदास तक सबने जनमानस को प्रेम और भाईचारा के साथ सत्य और अहिंसा का पाठ पढाया और शोषण रहित आधुनिक सतनाम संस्कृति का उदगार हुआ।

महामानव बुद्ध ने जहाँ पंचशील के साथ ‘आत दीपो भव’ कहा वहीं गुरु घासीदास ने पंचशील को जीवन में ढालने को साथ ‘अपन घट ही के देव ला मनाबो’ कहा। फलस्वरूप रूढिवाद और अन्धविश्वास से समाज को मुक्ति मिला। लेकिन यह खेद के साथ कहना पड़ता है कि आज हम अपने गुरुओं संत महापुरूषों को बताये मार्ग से भटकते जा रहे हैं और चकाचौंध में फंसकर उन्हीं पुरातन पंथी रुढिवादी संस्कृति को अपनाते जा रहे हैं. फलस्वरूप सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक व न्यायिक शोषण के साथ बड़े पैमाने पर सांस्कृतिक शोषण के शिकार होते जा रहे हैं। शिक्षा और आधुनिकरण के दौर में हम बहुत पीछे नजर आते हैं उल्टा इलेक्ट्रानिक मिडिया और रेडियो टीवी के माध्यम से चमत्कार के चक्कर में उलझ कर न्यूक्लियर फेमली बनते जा रहे है. खासकर शिक्षित वर्ग समाज और सामाजिकता दिन प्रतिदिन दूर होते जा रहे हैं । अब भी वक्त है, हम अपने सतनाम संस्कृति को समझें और पुनर्जीवित करने का प्रयास करें ताकि आने वाला कळ उज्वल बन सके।

गुरू घासीदास जी की 255 वीं जयंती वर्ष 2011 के अवसर पर विचार मंथन श्रृंखला का आयोजन " सत्नाम संस्कृति – कल , आज व कल" विषय पर , छत्तीसगढ़ के प्रत्येक जिला के अलावा भारत के अन्य प्रदेशों में भी किया जा रहा है । इसी कड़ी में भिलाई दुर्ग के विभिन्न स्थानों पर 1दिसम्बर से 15 दिसम्बर 2011(समयः शाम 6 . 00 बजे से 8 .00बजे तक) तक विचार मंथन श्रृंखला का आयोजन निम्नानुसार है ः-

क्र	दिनॉक	स्थान	सहयोगीसंगठन	कार्यक्रम प्रभारी	अध्यक्षता	मुख्यअतिथि	प्रमुख वक्ता	विशेष
1	1-12-011 (गुरूवार)	सतनाम धाम रिसाली	जय सतनाम युवा मंच रिसाली	श्री भजन दास बांधे	श्री गोटी लाल कुर्रे	डॉ ए डी बनर्जी	श्री टी दास	
2	2-12-011 (शुक्रवार)	सतनाम धाम शिवाजी नगर	गु घा सांभसमिति शिवाजी नगर	श्रीमतीसरोजबालापाहित	श्री आनंद बघेल	श्रीबीएलचांदवानी	श्री ए के महिपाल	
3	3-12-011 (शनिवार)	सतनाम धाम कोहका	सतनामी मित्र मंडल कोहका	श्री गेंद लाल राय	श्री जे एल राय	श्रीआरआर टांडिया	श्रीआर सी देशलहरा	
4	4-12-011 (रविवार)	सतनाम धाम भटगॉव	जयसतनामसत्संग युवा समिति	श्री ऋषि कुमार टंडन	श्री केआर मारकण्डे	श्री एस के केशकर	श्री गोवर्धन लाल टंडन	
5	5-12-011 (सोमवार)	सतनाम भवन से .6 ,भिलाई	गुरू घासीदास सेवा समिति	श्री मंशाराम कुर्रे	श्री एमएल भतरिया	श्री एस एल जांगड़े	श्री घनाराम ढीढे	
6	6-12-011 (मंगलवार)	सतनाम धाम कृष्णा नगर	युवा सतनाम समिति कृष्णा नगर	श्री राजेन्द्र प्रसाद महिलांग	श्री आरडी जोगांस	श्री एसपी डिंडोरे	श्री डी एस नवरंगे	
7	7-12-011 (बुधवार)	सतनाम धाम मिनी माता नगर	सतनाम समिति मिनी माता नगर	डॉ डी एस बंजारे	श्री टीआर कोसरिया	श्री मदन सिंह कुर्रे	श्री अशोक कुमार बारले	
8	8-12-011 (गुरूवार)	सतनाम धाम छावनी	सतनामी समाज छावनी	श्री नारायण कुर्रे	डॉ केशव देशलहरा	श्री भागीरथी बघेल	श्री राजेन्द्र कुमार बंजारे	
9	9-12-011 (शुक्रवार)	सतनाम धाम कोसा नगर	सतनामी समाज कोसा नगर	श्री पंचरामबंजारे	डॉ उबारन टंडन	डॉ एल एल मारकंडे	श्रीमती किरण चॉदवानी	
10	10-12-011 (शनिवार)	सतनाम धाम धनोरा	मिनी माता महिला समिति धनोरा	श्री चंद्रशेखर बंजारे	श्रीआरएल ढीढी	श्री एल डी देशलहरा	श्री डी आर जोशी	
11	11-12-011 (रविवार)	सतनाम धाम उमदा	गुरू बालकदास कल्याण समिति उमदा	श्री राघवराम डहरिया	श्री एस आर डाहरे	श्री कमल टंडन	श्री बाबू राव राम बंजारे	
12	12-12-011 (सोमवार)	सतनाम धाम खुर्सीपार	सतनाम धाम समिति खुर्सीपार	श्री के एल सावर्णी	डॉ आरएस बारले	श्री जी पी कुर्रे	श्रीमती शकुंतला भारती	

13	13-12-011 (मंगलवार)	सतनाम धाम उमरपोटी	सतनामी समाज उमरपोटी	श्री हिरामन पाटील	डॉआरआर बारले	श्री एच एल घीडोले	श्री भागवत राम बंजारे	
14	14-12-011 (बुधवार)	सतनाम धाम बानबरत	सतनामी समाज बानबरत	डॉ ए डी बनर्जी	डॉ एसआर बंजारे	डॉ पी बालकिशोर	श्री गजेन्द्र खिलारी	
15	15-12-011 (गुरूवार)	सतनाम धाम कातुलबोर्ड	मिनी माता दीदी बैंक कातुलबोर्ड	श्रीमती सौली बघेल	श्रीभागवत प्रसादमारकण्डे	श्री डी पी बेर	डॉ छत्रसाल गायकवाड़	
१६	दिल्ली	महेतरू डेरा	सतनाम भवन	देव भारद्वाज सियाराम लहरे	प्रोफेसर जोशी			
१७	रायपुर	रायपुर	सतनाम भवन	शिव टन्डन लखन कोशले				

समाज के सम्मानीय जन उक्त विषय पर अपना विचार प्रस्तुत करेंगें ।कृपया अधिक से अधिक संख्या में उपस्थित हो कर कार्यक्रम का लाभ उठायें। **" सत्नाम संस्कृति – कल , आज व कल"** विषय पर लेख भी आमंत्रित है । इसके अलावा अन्य स्थानों पर भी कार्यक्रम आयोजित किये जा रहे हैं ।**आओ गुरु पर्व को सफल बनावें** ।

विनीत
विचार मंथन श्रृंखला आयोजन समिति , भिलाई दुर्ग (छ. ग.)
वर्ष 2011